REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

उत्तर बिहार में नील उद्योगः एक अध्ययन

डॉ. मनोज कुमार
एम० ए०, बी० एड०, पी–एच० डी०,नेट,
+2 शिक्षक, उच्च विद्यालय, खिरहर.

भूमिकाः–

उत्तर बिहार में नील उद्योग एक ऐसे ऐतिहासिक एवं क्रांतिकारी प्रसंग से जुड़ा हुआ है जिस ओर 20वीं शताब्दी में पूरे विश्व का ध्यान आकृष्ट हुआ था। बीसवीं सदी के प्रथम दो दशकों में उत्तर बिहार में नील की खेती के साथ निलहे कोठी वालों का अत्याचार और उस अत्याचार से किसानों को छुटकारा के दिलाने के लिए महात्मा गाँधी द्वारा चंपारण में चलाया गया सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्राता आंदोलन के इतिहास का एक रोमांचकारी प्रसंग है।

प्राचीन काल से ही भारत में नील का उत्पादन और उपयोग गुजरात तथा पश्चिमी भारत में किया जाता था। वहीं से सिकन्दर महान के अभियान के समय उसका यूरोप में प्रवेश हुआ था। मध्यकाल में आइन ए अकबरी' में यह वर्णन मिलता है कि उत्तम कोटि का नील गुजरात प्रांत के अहमदाबाद में पैदा होता था। यह नियमित रूप से कुस्तुनतुनिया तथा अन्य जगहों पर निर्यात किया जाता था। अफ्रीका होकर एशिया में आगे के मार्ग की खोज के उपरांत यह पुर्त्तगालियों, डचों और स्पेनिशों के हाथों व्यापार का एक लाभदायक जरिया साबित हुआ।

मुगलकालीन भारत में नील की खेती का महत्वपूर्ण स्थान था। आगरा में नील की खेती का महत्वपूर्ण स्थान था। आगरा के पास बयाना में नील की सर्वश्रेष्ठ किस्म पैदा होती थी जबकि घटिया किस्म की नील का उत्पादन दोहाब, खुर्जा एवं कोईल (अलीगढ़) के पास होता था, अहमदाबाद के पास सरखेज में उच्च श्रेणी की नील पैदा होती थी। किन्तु सिंध प्रदेश में स्थित सेहवान क्षेत्रा में उमादित नील सरखेज नील से कमतर मानी जाती थी।

उत्तर बिहार में नील उद्योग का प्रारंभ

उत्तर बिहार में नील उद्योग को प्रारंभ करने का श्रेय तिरहुत (मुजफ्फरपुर) और दरभंगा के कलक्टर फ्रांकोइस ग्रैण्ड को (1782–89) को जाता है। ग्रैण्ड ने अपने दसवेजों में इस तथ्य का उल्लेख किया है कि उन्होंने यूरोपीय ढंग पर बिहार में नील उद्योग का प्रारंभ खुद अपने खर्च पर किया। इस संदर्भ में 7 अगस्त 1972 ई0 का एक पत्रा तिरहुत के कलक्टर आर. बर्थुस्ट का मिला है जिसका सारांश यह है कि नील की खेती करने वाले रैयतों को 3 रूपया भूमि का और 3 रूपया नील की खेती के लिए दिया जाता था।

1802 ई0 के एक विवरण से ज्ञात होता है कि उस समय जिले में 13 प्लान्टर्स थे। जिसमें चार अंग्रेज, एक स्कॉट, चार आयरलैंड, एक जर्मनी के, दो इटली के और एक भारतीय थे तथा सोलह नील फैक्ट्रियां थी। जिसके अधीन 598 बीघा जमीन पर नील की खेती होती थी। चम्पारण और दूसरे जगहों को छोड़कर मिथिला में नील फैक्ट्रियों की संख्या 1810 ई0 में 25 हो गई।

इस प्रकार तिरहुत का कलक्टर मिस्टर एफ. ग्रैण्ड उत्तर बिहार में आधुनिक पद्धति से नील उत्पादन का प्रणेता था। उसने स्वयं अपनी तीन निजी फैक्ट्रीयां स्थापित की थी। उसी के नक्शे कदम पर चलकर भागलपुर के सिविल सर्जन मि. क्लास ने जिले में 1793 ई0 में पहला नील फैक्ट्री खोला था मि0 ग्रैण्ड के प्रोत्साहन से कई यूरोपियन नील कोठी स्थापित करने के लिए भाग आए। हालांकि मि0 ग्रैण्ड को अपने निजी व्यापार में लगे रहने के कारण नौकरी से हाथ धोना पड़ा, उपर इसमें संदेह नहीं कि वह बिहार में नील उत्पादन का प्रणेता था।

19वीं सदी में नील उद्योग का उत्तर बिहार में बड़ी तेजी से विकास हुआ। तिरहुत के कलक्टर द्वारा 1810 ई0 में भेजे गए रिपोर्ट के अनुसार तिरहुत क्षेत्रा से 10 हजार मन से कम नील शायद ही एक वर्ष में कलकत्ता से यूरोप के देशों को निर्यात के लिए भेजा जाता था। 1850 ई0 तक तिरहुत में 80 से कम फैक्ट्रीयां नहीं थी। इनमें से बहुत तो चीनी की फैक्ट्रीयां थी। लेकिन नील ने यूरोपीय उद्यागों में चीनी उद्योगों को काफी पीछे छोड़ दिया और बहुत से चीनी फैक्ट्री नील फैक्ट्री में बदल दिए गए।

चंपारण सत्याग्रह के करीब सौ साल बाद बिहार में नील की खेती लौट रही है। ब्रिटिश काल में यह खेती जुल्म व शोषण का प्रतीक बन गई थी लेकिन बदले हालात में किसानों ने समृद्धि की उम्मीद पाल इसकी खेती शुरू की है। भोजपुर के शाहपुर प्रखंड में इस साल पहली बार दो किसानों ने एक–एक एकड़ में खेती हैं। अप्रैल के पहले हफ्ते में बोए बीज से फसल तैयार होने के बाद करीब तीन माह पर इसकी पहली कटिंग की गई है। सरना गांव में किसान गजाधर सिंह काफी कम लागत में बेहतर उत्पादन से बेहद खुश हैं। एक एकड़ में करीब सात क्विंटल सूखी पत्तियों का उत्पादन हुआ है। यह माल केरल की कंपनी ले जाएगी। किसानों ने नील उत्पादन से जुड़ी केरल की एक कंपनी से करार किया है। कंपनी ने ही किसानों को बीज उपलब्ध कराया था। उत्पादन के बाद करीब 60 रूपये किलो की दर से सूखी पत्तियां खरीदने का भरोसा दिया है।

विश्वभर में प्राकृतिक नील की बढ़ी मांगः

नील की बढ़ती मांग के मद्देनरज भारत समेत विभिन्न देशों में नील की खेती फिर से शुरू हो रही है। जैसे–जैसे लोग स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो रहे हैं विश्व भर में प्राकृतिक नील की मांग बढ़ती जा रही हैं। बाजार के इस रूझान ने ही किसानों को नील की खेती की और फिर से आकर्षित किया है। वहीं नील के पौधों के जड़ों की गांठों में रहने वाले बैक्टीरिया वायुमंडलीय नाइट्रोजन को नाइट्रट में बदलकर मिट्टी की उत्पादकता को संरक्षित करते हैं। किसान इसका उपयोग जैविक खाद के तौर पर भी करते हैं।

शाहपुर के किसानों ने बनाया खांटी किसान प्रोड्यूसर कंपनीः

शाहपुर के किसानों ने किसानश्री से सम्मानित उमेशचंद्र पांडेय उर्फ मुन्ना पांडेय की प्रेरणा से खांटी किसान प्रोड्यूसर कंपनी बनायी है। यह कंपनी अभी निबंधन की प्रक्रिया से गुजर रही है लेकिन इससे जुड़े किसानों गैर परंपरागत कृषि व औषधीय पौधों की खेती की शुरूआत कर दी है। भोजपुर के शाहपुर प्रखंड में इस साल पहली बार दो किसानों ने एक–एक एकड़ में नील की खेती है। सरना के गजाधर सिंह और बरीसवन के बलिराम तिवारी ने एक–एक एकड़ में नील की खेती शुरू की है। केरल की कंपनी ने बिहार में सबसे पहले भोजपुर में ही नील की खेती का प्रयोग कराया है। भोजपुर का प्रयोग सफल रहा और यह यहां के किसानों को रास आयी तो बिहार के अन्य जिलों में भी अगले साल से नील की खेती शुरू हो सकती है।

उत्तर बिहार में नील की खेती और नील की कोठियां

दरभंगा जिले में नील की खेती स्थायी बंदोवस्त की व्यवस्था के समय से ही यूरोपियन एजेन्सियों द्वारा होती थी। 19वीं सदी के अंत में दलसिंगसराय, जितवारपुर, तिवारा और कमतौल में नील फैक्ट्रीयां स्थापित हुई थी। 1800 ई0 से 1900 ई0 के बीच नील की खेती दरभंगा जिले के लगभग सभी थाना क्षेत्रों में होती थी और 1874 ई0 तक संभवतः दरभंगा जिले में भारत का सबसे बड़ा नील फैक्ट्री (कंसर्न) पंडौल में था और 300 वर्ग मील इसका क्षेत्र था।

सीधे तौर पर 30,760 एकड़ से कम क्षेत्रा में नील की खेती नहीं होती थी। यों कह सकते हैं कि इस क्षेत्रा में कम प्रतिशत क्षेत्रों में नील की खेती होती थी। हालांकि नील खेती के वास्तविक क्षेत्रा का अनुमान

लगाया जाना कठिन है क्योंकि जिले में (सर्वे एवं सेटलमेंट आपरेशन 1890–1910 ई0 तक) के रिकार्ड में नील के अधिकार क्षेत्र का पता स्पष्ट नहीं है। कुल मिलाकर दरभंगा जिले में 28 नील फैक्ट्रीयां थी और 36 आउटवर्क्स थे।

तिरहुत– तिरहुत के कलक्टर के रूपें एक ग्रैण्ड के 1782 ई0 में पदस्थापित होने के बाद यहां नील की खेती एक उद्योग के रूप में विकसित हुआ। 1793 ई0 तक तिरहुत में नौ मील फैक्ट्रिया हो गई।

चम्पारणः– आंग्ल नेपाल युद्ध के बाद 1813 ई0 के चम्पारण जिले में नील की खेती कर्नल हिफी द्वारा प्रारंभ की गई। रामपुर और तुरकौलिया में मेसर्स मोरान एंड हिल द्वारा क्रमशः नील फैक्ट्री स्थापित की गई। चम्पारण में चीनी उद्योग भी 1850 ई0 तक फलता–फूलता रहा जिसे नील उद्योग ने दबाया। 19वीं सदी के अंतिम दशक में चम्पारण में 21 नील फैक्ट्री तथा 46 आउटवर्क्स थे।

सारणः–सारण जिले में 1793–94 ई0 में नील की खेती प्रारंभ हुई जब मेसर्स आइवरी एंड ब्लेको–सरकार से अकवरपुर (शीतलपुर) में फैक्ट्री निर्माण की अनुमति प्राप्त की। 1794 ई0 में शोर ने दरौली में फैक्ट्री लगाने की अनुमति प्राप्त की। उन्हें इसके लिए 50 बीघा जमीन का अपने अधिकार में लेने का लाइसेंस मिला था। इस तरह 19वीं सदी के प्रारंभिक काल में जिले के सभी भागों में फैक्ट्री स्थापित किए गए। 1850 से 1898 ई. के बीच इस क्षेत्र के चीनी उद्योग नील उद्योग के रूप में तब्दील हो गया।

भागलपुरः– भागलपुर जिले के उत्तरी हिस्से में प्रारंभ के नील की व्यापक खेती होती थी। लेकिन धीरे–धीरे यह उद्योग पिछड़ता गया। सर्वे एंड सेटलमेंट आपरेशन 1900–1950 के अनुसार यहाँ सिर्फ पाँच फैक्ट्रिया नील का उत्पादन कर रही थी। नारायणपुर और पाथरगढ़ भागलपुर जिले के उत्तरी हिस्से में स्थित थी। वहीं शेष तीन कहलगांव, संग्रापुर और सलमपुर अर्थात् जिले के दक्षिणी भाग में स्थित थी। भागलपुर जिले में 34 नील फैक्ट्रियां पूर्व में अस्तित्व में थी तथा यहां नील की खेती जोरों पर थी।

पूर्णियाः– 18वीं और 19वीं सदी में पूर्णिया जिले के नील की खेती जोरो पर थी। पूर्णिया के एक प्लान्टर ए. डब्लू जानसन का कहना था, उसके परदादा जो नील प्लान्टर थे, यह इस जिले में 19वीं सदी में आए। सम्भवतः नीलगंज जिले में प्रथम क्षेत्र था जहां 1925 ई0 में नील फैक्ट्री खड़ा किया गया। 'ईवाल्यूशन ऑफ स्टेट बैंक ऑफ इंडिया नामक पुस्तक में अमित कुमार वागची मानते है कि सैम डोमिनगो विधि से नील उत्पादन करने वाले जॉन प्रिस्ले थे। उन्होंने ही चौबीस परगना जिले में बारासात के निकट नीलगंज में जुलाई 1791 ई0 में एक नील फैक्ट्री स्थापित की थी। 19वीं सदी के पूर्णिया जिले में 92 फैक्ट्रियां थी लेकिन 1908 ई0 तक इनकी संख्या घटकर 21 ही रह गई। हालांकि पूर्णिया जिले के सिर्फ एक प्रतिशत क्षेत्रा में ही नील की खेती होती थी।

मुंगेरः– मुंगेर में तिरहुत, चम्पारण, सारण, की तुलना में नील की खेती नगण्य थी। 1830 ई0 में मुंगेर के कार्यकारी मजिस्ट्रेट ने बंगाल सरकार को लिखा था कि यहाँ नील की खेती सीमित है और इससे संबंधित विवाद कम है। 1878 ई0 मे नील की खेती के संबंध में बेगूसराय सवडिवीजन के अफसर इंचार्ज ने रिपोर्ट किया था। डब्लू हंटर के स्टैटिकल एकाउंट और मुंगेर के डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (1960) के अनुसार 35 नील फैक्ट्रिया और उसके आउटवर्क्स मुंगेर जिले में थे।

स्पष्टतः पूरे बिहार में नील फैक्ट्रियां तथा उनके आउटवर्क्स निम्नलिखित थेः–

क्र.सं.	जिले का नाम	फैक्ट्रियों की संख्या	आउटवर्क्स की संख्या	कुल
1.	मुजफ्फरपुर	32	48	80
2.	दरभंगा	28	36	64
3.	चम्पारण	21	53	74
4.	सारण	31	42	73
5.	भागलपुर	43	–	43
6.	पुर्णियां	20	44	64
7.	मुंगेर	10	20	30
8.	गया	1	–	1
	कुल	186	243	429

वस्तुतः पूरे भारत वर्ष में 1892 ई0 में 2702 नील से संबंधित फैक्ट्रियां थी जिसमें से 430 नील फैक्ट्रियां बिहार में थी। भारत से उस समय 15 लाख पौंड नील निर्यात होता था जिसका मूल्य लगभग 50 लाख रूपया था।

निष्कर्षः–

इसमें संदेह नहीं कि पूरे देश में नील के उत्पादन का 31 प्रतिशत बिहार से प्राप्त होता था। बिहार में 326.99 मन नील का उत्पादन या जबकि पूरे देश में नील के उत्पादन का 31 प्रतिशत बिहार से प्राप्त होता था। उस समय 106.887 मन नील का उत्पादन होता था। लेकिन बिहार में बंगाल की तरह किसी पक्ष के लिए विशेष नियम नहीं बनाए गए थे। विदेशी में नील की बढ़ती मांग ने अनेक नील फैक्ट्रियां को स्थापित करने की प्रेरणा दी थी।

संदर्भ–सूची

1. सुधीर चन्द्र चक्रवर्ती, कुंज बिहारी कुंडु, मदन मोहन पात्रा (1989), इकोनोमिक डेवलपमेन्ट ऑफ इंडिया, पृष्ठ संख्या 208
2. घनश्याम शर्मा (1950) मध्यकालीन भारतीय सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थाए, जयपुर, पृ0 280
3. धर्मकुमार एवं तपन राय चौधरी (1984) दि कैम्ब्रिज इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया, पृ0 315
4. पी.सी. राय चौधरी–डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ सारण, पृ0 214
5. ब्रज किशोर सिंह (2009), नील संघर्ष और गाँधी, पृ0 19
6. सी.जे. सीवेन्सन मूरा (1922), फाइनल रिपोर्ट आन द सर्वे एंड सेटलमेंट आपरेशन युक्त द मुजफ्फरपुर डिस्ट्रिक्ट, पटना, पृ0 336
7. गिरीश मिश्रा (1816), एग्ररियन रिलेशन्स ऑफ परमानेन्ट सेटलमेंटः– केस एडी ऑफ चंपारण, दिल्ली, पृ0 90